International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 8; August 2016; Page No. 407-413

विधवाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का सूक्ष्म अवलोकन

[1] डॉ0 मोहम्मद इसरार खाँ, [2] रविन्द्र कुमार

[1] सहायक प्रोफेसर, व्यवहारिक एवं क्षेत्रीय अर्थशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।
[2] शोध छात्र, व्यवहारिक एवं क्षेत्रीय अर्थशास्त्र विभाग, महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित है तथा चयनित ग्राम पंचायत में ग्रामीण दाम्पत्य एवं वैधव्य जीवन का विश्लेषण करता हुआ विधवाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का वर्णन करता है। ग्रामीण क्षेत्र में स्त्रियाँ, विशेषतया वह स्त्रियाँ जो कम उम्र में विधवा होती हैं, एक ओर तो मानसिक व भावात्मक रूप से परेशान होती है तथा दूसरी ओर परिवार का मुखिया उन पर अनेक प्रकार से अत्याचार करता है उनसे नौकरानी के रूप में घर में सभी कार्य कराता है और कोई–कोई परिवार का मुखिया उनको सम्पत्ति से बेदखल करके अपने परिवार से अलग कर देता है। तब विधवा अपने माता–पिता या अन्य रिश्तेदारी में रहती हैं जिससे विधवा की कई जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। जब वह अपनी जीविका चलाने के लिए घर से बाहर काम करने जाती हैं तो वह महिलाओं के साथ प्रतिदिन घटित हो रही घटनाओं को देखती हैं जिसका एक बड़ा मानसिक व भावात्मक धक्का विधवा को लगता है। उसके दिल में खौफ भर जाता हैं। वह अन्दर से टूट जाती है और धीरे–धीरे अपनी मानसिक व गुणात्मक क्षमता को खो देती है उसकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति कमजोर होती चली जाती है तथा वह निर्धनता के दुष्चक्रो में फंसी रह जाती है।

मूल शब्दः ग्रामीण दाम्पत्य वैधव्य जीवन, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक–आर्थिक सुरक्षा, आय के साधन, सामाजिक–आर्थिक सीमायें

1. प्रस्तावना
एक महिला अपनी शादी से लेकर अपने पति की मृत्यु होने तक उसके साथ जीवन गुजारती उसे दाम्पत्य जीवन कहते हैं। यह समय जिन्दगी का सबसे अच्छा समय होता है। जब किसी महिला के पति की किसी प्रकार से मृत्यु हो जाती है तो उसे महिला का वैधव्य कहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के कम पढ़े–लिखे होने के कारण सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं का लाभ नहीं उठा पा रही हैं। चिकित्सकीय सुविधाओं की कमी के कारण इनको उचित समय में उचित दवाई नही मिल पाती इसीलिए अधिकांश विधवाएं अस्वस्थ्य हैं। अनेक प्रकार की परम्पराओं व महिलाओं के साथ घटित हो रही प्रतिदिन घटनाओं के डर से, घर के बाहर काम करने नही जाती हैं। जब घर के सभी खर्चे सिर्फ पति की आय पर निर्भर हों, उसके बच्चे अधिक छोटे–छोटे हो तथा दूसरी जगह से आय प्राप्त करने के कोई साधन न हों तो वर्तमान में तो उसकी व उसके बच्चों की स्थिति खराब होती ही है वह दीर्घकाल के लिए गर्त में चली जाती है, उनके सभी प्रकार के सपने ध्वस्त हो जाते है। अपने बच्चों को ठीक प्रकार से शिक्षा नही दिला पाती, उनकी सामाजिक–आर्थिक व मानशिक स्थिति दीन–हीन होती चली जाती है, तो मजबूरी में अपने छोटे–छोटे बच्चों को आय के साधनो के रुप में प्रयोग करने लगती है। प्राचीनकाल में भारत में सती प्रथा चालू थी। जब कभी किसी महिला के पति की किसी प्रकार से मृत्यु हो जाती थी तब समाज के लोग उस महिला को राजी से या फिर जबरदस्ती पति के साथ जला देते थे। लोग मानते थे कि पत्नी को पति के साथ जलाने पर दोनो को स्वर्ग मिलता है। राजा राममोहन राय ने इसका विरोध किया और ब्रिटिश गर्वनर जनरल लार्ड विलियम बैटिंग से अनुरोध करके 1829 ई0 में सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगवाया। फिर लार्ड कैनिन ने 1856 ई0 में हिन्दू विधवा पुनर्विवाह की अनुमति दी।

आजादी के बाद सरकार ने विधवाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति को ठीक करने के लिए व उनका जीवन स्तर ऊँचा उठाने तथा महिला सशक्तिकरण हेतु अनेक योजनओं को शुरु किया जैसे साठ साला पेंशन, विधवा पेंशन, इन्दिरा आवास, इन्दिरा महिला योजना, महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना आदि को शुरु किया गया है। परन्तु ग्रामीण समाज में आज भी अधिक मात्रा में रुढ़वादितायें तथा परम्परायें पायी जाती हैं जिसके कारण महिलाओं को घर के अन्दर कैद होकर रहना पड़ता है। इसीलिए ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का शिक्षा का स्तर बहुत नीचा है। चयनित ग्राम पंचायत में केवल 7.7 प्रतिशत विधवायें साक्षर हैं जिनमें अधिकतम की शैक्षिक योग्यता मात्र 8वीं पास पाई गयी है। अतएव विधवाएं सरकार द्वारा चलाई गयी तमाम योजनाओं का पूर्ण लाभ नहीं उठा पा रही हैं। यह लाभ बीच के दलाल ही हड़प लेते हैं। अनेक प्रकार से विधवाओं का सामाजिक–आर्थिक शोषण होता रहता है। वह गरीबी के दुष्चक्र से बाहर नहीं निकल पाती हैं। वह अपने बच्चों को ठीक प्रकार से शिक्षा नहीं दिला पाती हैं। मजबूरी में उन कठोर कार्यों को कराती हैं जो उनसे सम्बन्धित नहीं होते हैं। जिसका घातक प्रभाव उनके स्वास्थ्य व मानसिक स्तर पर पड़ता है। उनका शारीरिक, मानसिक विकास रुक जाता है। कभी–कभी विधवाओं के बच्चों पर कम नियन्त्रण होने के कारण वह गलत रास्तों को अपना लेते हैं जैसे–जुआ खेलना, चोरी करना, शराब पीना आदि के आदी हो जाते हैं।

2. उद्देश्य
प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।
1. ग्रामीण वैधव्य जीवन का अध्ययन करना।
2. विधवाओं की सामाजिक–आर्थिक सीमाओं का अध्ययन करना।
3. विधवाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य का अध्ययन करना।

3. शोध साहित्य का अवलोकन
Idialu (2012) [1] ने अफ्रीका के भिन्न–भिन्न समुदायों की विधवाओं से प्राथमिक आकड़ें प्राप्त किये तथा विश्लेषण करने पर पाया कि विधवाएँ अमानवीय व्यवहार की शिकार होती हैं और वह हमेशा दर्द

भरा और मानसिक प्रभाव उनको अदृश्य रूप से पूरे जीवन भर प्रभावित करता है।

Katia Sarla *et al*. (2012) ने भारत के केरल राज्य में प्राथमिक सर्वे के आधार पर विधवाओं से आँकड़ें एकत्रित करके विश्लेषण किया और पाया कि विधवाओं को दो प्रकार के झटके लगते हैं–एक प्रकार का आर्थिक व शारीरिक और दूसरे एक Phenomenal झटका लगता है।

Pamela *et al*. (2014) ने नेपाल के काठमांडु, बेली, सुरखेत, चीतवान और केबरी जिलों में विधवाओं के छः समूहों पर ध्यान दिया और उच्च जाति की विधवाओं से सम्बन्धित साक्षात्कार के माध्यम से आँकड़ों एकत्रित किये। आँकड़ों के विश्लेषण से पता चला कि एक ऐसी महत्वपूर्ण सहायता की जरूरत है जोकि विधवाओं और उनके बच्चों पर मानसिक प्रभाव को महसूस नहीं होने दें।

Dreze and Shrinivasan (1996) ने उपभोक्ता व्यय के आधार पर राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण से ग्रामीण भारत में विधवापन और गरीबी में सम्बन्ध निकाला। उन्होंने प्रति व्यक्ति पूँजी व्यय के आधार पर गरीबी का अनुमान लगाया और पाया गया कि विधवा परिवार की मुखियाओं पुरूष परिवार के मुखियाओं से अधिक गरीब हैं।

Chandra (2011) [5] ने विभिन्न प्रकार की सरकारी रिपोर्ट एवं विधवाओं से सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि समाज में विधवाओं की सुरक्षा और समावेशन के लिए सरकारी नीति की आवश्यकता है।

Swain (2005) [6] ने भारत में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे 1998–99 के आधार पर विधवाओं से सम्बन्धित प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण किया और ज्ञात किया कि एक तलाक शुदा महिला की तुलना में एक विधवा महिला परिवार की मुखिया के सामने अधिक समस्यायें होती है।

Bennett and Victor (2012) [7] ने साक्षात्कार के माध्ययम से प्राप्त आकड़ों से वैधव्य प्राप्त व्यक्तिओं का भावात्मक अकेलेपन के विचारों के साथ अकेलेपन का अनुभव समझाया और निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक और भावात्मक लगाव में कमी आई।

4. शोध विधि

ग्रामीण विधवाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए ग्राम टेड़ा श्रीराम, पो0 पहाडगंज, तह0 बीसलपुर, जिला पीलीभीत, उ0प्र0 की सभी विधवाओं को चयनित किया गया है। इसमें 11 विधवायें अनुसूचित जाति की और 21 विधवाएं अन्य पिछड़ा वर्ग की हैं तथा 7 विधवायें मुस्लिम धर्मिक समुदाय की हैं। यह शोधपत्र प्राथमिक सर्वे पर आधारित है। सर्वे का विश्लेषण समान्तर माध्य, माध्यिका व प्रमाप विचलन आदि साख्यिकी विधियों द्वारा किया गया है।

5. विश्लेषण

विधवाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए जनपद पीलीभीत तहसील बीसलपुर की चयनित ग्राम पंचायत टेड़ा श्री राम में विधवाओं का दाम्पत्य जीवन, बैधव्य जीवन, शिक्षा, स्वास्थ्य, समाजिक–आर्थिक सुरक्षा, आय के साधन, सामाजिक–आर्थिक सीमाओं का अध्ययन निम्न प्रकार से किया जा रहा है।

5.1 ग्रामीण दाम्पत्य जीवन

वह जीवन जो एक स्त्री अपनी शादी से लेकर अपने पति की मृत्यु होने तक उसके साथ व्यतीत करती है उसे दाम्पत्य जीवन कहा जा सकता है। ग्रामीण दाम्पत्य जीवन का सामान्तर माध्य माध्यिका मूल्य व प्रमाप विचलन की गणना तालिका नं0 01 में की गयी है।

तालिका 1: दाम्पत्य जीवन समान्तर माध्य, माध्यिका, तथा प्रमाप विचलन की गणना।

दाम्पत्य जीवन वर्षों में CI	विधवाओं की संख्या f	संचयी आवृत्ति cf	माध्य मूल्य m.v.	A=27.5 X-A = dx	किग	fdx.dx=fdx²
0-5	1	1	2.5	-25	-25	625
5-10	1	2	7.5	-20	-20	400
10-15	2	4	12.5	-15	-30	450
15-20	11	15	17.5	-10	-110	1100
20-25	3	18	22.5	-5	-15	75
25-30	8	26	27.5	0	0	0
30-35	5	31	32.5	+5	+25	125
35-40	2	33	37.5	+10	+20	200
40-45	2	35	42.5	+15	+30	450
45-50	2	37	47.5	+20	+40	800
50-55	1	38	52.5	+25	+25	625
55-60	1	39	57.5	+30	30	900
	छत्र 39				$\sum$fdx=-30	$\sum$fdx²=5750
समान्तर माध्य	26.73 वर्ष					
माध्यिका	25.94 वर्ष					
प्रमाप विचलन	12.11 वर्ष					

स्त्रोत– सर्वेक्षण

चयनित ग्राम पंचायत में दाम्पत्य जीवन 27 वर्ष है, माध्यिका मूल्य 26 वर्ष है तथा प्रमाप विचलन 12 वर्ष है। यह जीवन जिन्दगी का सबसे अच्छा जीवन होता है लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में यह अवधि बहुत कम है विधवाओं के पतियों की मृत्यु के बाद इनका जीवन कष्ट पूर्वक गुजरता है। अधिकांशतया इनका जीवन तब तक कष्ट पूर्वक रहता है जब तक इनके बच्चे बड़े नही हो जाते।

5.2 ग्रामीण वैधव्य जीवन

पति की मृत्यु के बाद पत्नी जो जीवन गुजारती है उसे वैधव्य जीवन कह सकते हैं। ग्रामीण बैद्यव्य जीवन का समान्तर माध्य, माध्यिका मूल्य व प्रमाप विचलन की गणना तालिका नं0 02 में की गयी है।

तालिका 2: ग्रामीण वैधव्य जीवन से समान्तर माध्य, माध्यिका तथा प्रमाप विचलन की गणना।

दाम्पत्य जीवन वर्षों में CI	विधवाओं की संख्या f	संचयी आवृत्ति cf	माध्य मूल्य m.v.	A=22.5 X-A = dx	किग	fdx.dx=fdx²
0-5	7	7	2.5	-20	-140	2800
5-10	3	10	7.5	-15	-450	675
10-15	11	21	12.5	-10	-110	1100
15-20	4	25	17.5	-05	-20	100
20-25	8	33	22.5	0	0	0
25-30	2	35	27.5	+5	+10	50
30-35	2	37	32.5	+10	+20	200
35-40	2	39	37.5	+15	+30	450
	N=39				∑fdx=-255	∑fdx²=5375
समान्तर माध्य	15.96 वर्ष					
माध्यिका	14.32 वर्ष					
प्रमाप विचलन	9.7 वर्ष					

स्त्रोतः– सर्वेक्षण

चयनित ग्राम पंचायत में विधवाओं के वैधव्य जीवन का समान्तर माध्य 15.96 वर्ष है माध्यिका मूल्य 14.32 वर्ष तथा प्रमाप विचलन 9. 7 वर्ष पाया गया है जबकि दाम्पत्य जीवन का समान्तर माध्य 26.73 वर्ष है, माध्यिका मूल्य 25.94 वर्ष तथा प्रमाप विचलन 12.11 वर्ष पाया गया है।

तुलनात्मक अध्ययन से हम कह सकते हैं कि विधवाओं का दाम्पत्य जीवन वैध्वय जीवन से अधिक है। दाम्पत्य जीवन का समय ही किसी महिला की जिन्दगी का सबसे अच्छा समय होता है। इसमें दोनो पति–पत्नि दुख–सुख में साथ रहते हैं जब कभी किसी प्रकार की समस्या आती है तो दोनो मिलकर उसका हल निकालते हैं। सबसे बुरे दिन वह होते हैं जब किसी महिला को अपने पति के बिना दिन बिताने पड़ते हैं। अनेक प्रकार की अकेले ही जिम्मेदारियों को निभाना पड़ता है।

5.3 विधवाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक आार्थिक सुरक्षा, आय के साधन, परिवार से सम्बन्ध, बच्चों की शिक्षा

विधवाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक आार्थिक सुरक्षा, आय के साधन, परिवार से सम्बन्ध, बच्चों की शिक्षा का विश्लेषण तालिका संख्या 03 में किया गया है।

तालिका 3: विधवाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक आार्थिक सुरक्षा, आय के साधन, परिवार से सम्बन्ध, बच्चों की शिक्षा

क्रमांक	चर	संख्या	% में
अ.	विधवाओं की शिक्षा का अध्ययन		
1.	कुल विधवायें	39	100
2.	साक्षर विधवायें	3	7.7
3.	निरक्षर विधवायें	36	92.30
ब	विधवाओं के स्वास्थ्य का अध्ययन		
1.	स्वस्थ्य विधवाओं की संख्या	17	43.58
2.	अस्वस्थ विधवाओं की संख्या	16	41.04
3.	गम्भीर अस्वस्थ	6	15.38
स	सामाजिक आार्थिक सुरक्षा		
1.	कुल विधवाओं की संख्या	39	100
2.	इन्दिरा आवास प्राप्त	15	38.46
3.	पेन्शन	14	35.89
4.	राशनकार्ड	11	28.20
5.	अन्य लाभ	0	0
द.	आय के साधन		
1.	कुल विधवाएँ	39	100
2.	जिनके पास जमीन है	35	89.2
3.	जिनके पास जमीन नहींहै	4	10.26
4.	जिनके पास कुछ कार्य है	6	15.38
5.	जिनके बच्चों की सहायता मिल रही है	34	87.17
य.	विधवाओं का परिवार से सम्बन्ध		
1.	कुल विधवाओं की संख्या	39	100
2.	परिवार की मुखियॉ	11	28.20
3.	परिवार पर निर्भर	28	71.80
र.	विधवाओं के बच्चों की शिक्षा		
1.	उन विधवाओं की संख्या जिनके बच्चों की उम्र स्कूल जाने वाली है।	7	100
2.	उन विधवाओं की संख्या जिनके बच्चे स्कूल जा रहे है।	5	71.43
3.	उन विधवाओं की संख्या जिनके बच्चे स्कूल नहीं जा रहे है।	2	28.57

स्त्रोत प्रतिशत– सर्वेक्षण

चयनित ग्राम पंचायत में कुल विधवाओं की संख्या 39 है। इनमें 7.7 प्रतिशत विधवायें साक्षर है। इनकी अधिकतम योग्यता आठवी पास है। 92.30 प्रतिशत विधवायें निरक्षर है।

43.58 प्रतिशत विधवायें स्वस्थ्य है और 41.04 प्रतिशत विधवाएं अस्वस्थ्य हैं जिनको खॉसी जुकाम बुखार आदि बीमारियां है और 15.38 प्रतिशत विधवायें गम्भीर रूप से अस्वस्थ है जिनको बड़ी बीमारियां है जैसे–फालिस, ऑख से न दिखना बुढापे के रोग आदि बीमारी है।

चयनित ग्राम पंचायत में 38.46 प्रतिशत विधवाओं को इन्दिरा आवास मिला हुआ है तथा 35.89 प्रतिशत विधवाओं को पेंशन मिल रही है केवल 28.20 प्रतिशत विधवाओं के पास राशन कार्ड है।

89.74 प्रतिशत विधवाओं के पास जमीन 1 वीघा से 60वीघा तक है तथा 10.26 प्रतिशत विधवाओं के पास जमीन बिल्कुल नहीं है। 15. 38 प्रतिशत विधवाओं के पास कुछ न कुछ कार्य है तथा 87.17 प्रतिशत विधवाओं को बच्चों की सहायता मिल रही है।

28.20 प्रतिशत विधवायें परिवार की मुखियॉ है और 71.80 प्रतिशत विधवायें अपने परिवार पर निर्भर है।

17.94 प्रतिशत विधवाओं के बच्चों की उम्र स्कूल जाने वाली है। इनमें से 71.43 प्रतिशत विधवाओं के बच्चें स्कूल जा रहे हैं। 28.57 प्रतिशत विधवाओं के बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं।

5.4 आय के साधन

चयनित ग्राम पंचायत में विधवाओं की आय का मुख्य साधन उनकी जमीन है सहायक साधन के रूप में पेंशन व कार्यो को लिया जा सकता है । ग्राम पंचायत में कुल 39 विधवायें है जिनमें से 35 के पास थोड़ी बहुत जमीन है। 14 विधवाओं को पेंशन मिल रही है तथा 6 विधवाओं के पास कुछ न कुछ रोजगार हैं। विधवाओं की आय का मुख्य साधन जमीन का आवृत्ति का विश्लेषण तालिका नं0 05 में किया गया है।

तालिका 4: विधवाओं की आय का मुख्य साधन जमीन का आवृत्ति वितरण

जमीन (बीघा में) CI	विधवाओं की संख्या f	संचयी आवृत्ति cf	संचयी आवृत्ति : में Cf	कुल जमीन (बीघा में)	जमीन की cf	% में जमीन की cf
0-5	19	19	48.71	44	44	9.82
5-10	7	26	66.67	47	91	30.31
10-15	4	30	76.92	54	145	32.36
15-20	3	33	84.61	58	203	45.31
20-25	1	34	87.17	25	228	50.89
25-30	1	35	89.74	30	258	57.59
30-35	1	36	92.30	35	293	65.40
35-40	0	36	92.30	0	293	65.40
40-45	1	37	94.87	45	338	75.44
45-50	1	38	97.43	50	388	86.60
50-55	0	38	97.43	0	388	86.60
55-60	1	39	100	60	448	100
योग	39	.	.	448	.	.

स्रोत– सर्वेक्षण

तालिका से स्पष्ट है कि ग्राम पंचायत में 48.7 प्रतिशत विधवाओं के पास कुल जमीन का 9.8 प्रतिशत भाग है एवं इनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है। तथा 2.57 प्रतिशत विधवाओं के पास जमीन का 13.4 प्रतिशत भाग है इसीलिए असमानता अधिक है। 10.26 विधवाएँ ऐसी पाई गई है जिनके पास जमीन नहीं है। इनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त निम्न स्तर की पाई गई है। यह विधवाएँ अपने परिवार पर निर्भर हैं।

5.5 विधवाओं की सभी साधनों से आय

चयनित ग्राम पंचायत में विधवाओं की आय के साथ उनके बच्चों की मजदूरी को भी जोड़ा गया है और जो विधवायें अपने लड़को पर निर्भर है तो उनके लड़कों की आय को दिखाया गया है।

सर्वेक्षण से पता चला कि ग्राम पंचात में प्रत्येक मजदूर को महीने में 10–15 दिन का रोजगार मिल जाता है और यहॉ दैनिक मजदूरी 130 रू0 चलती है इसलिए प्रत्येक मजदूर के पास 13 दिन का रोजगार माना जिससे उनकी मासिक आय 1690 रू0 तथा वार्षिक आय 20800 रू0 होती है। आय का समान्तर माध्य, माध्यिका तथा प्रमाप विचलन का विश्लेषण तालिका नं0 05 में किया गया है।

तालिका 5: विधवाओं की आय की आय से समान्तर माध्य, माध्यिका व प्रमाप विचलन की गणना

विधवाओं की आय हजारों में	विधवाओं की संख्या	संचयी आवृति	माध्य मूल्य	कल्पित माध्य से विचलन	–	–
CI	**f**	**Cf**	**m.v.**	**A=112.5 X-A= dx**	**fdx**	**fdx.dx=fdx²**
0-25	10	10	12.5	-100	-1000	100000
25-50	13	23	37.5	-75	-975	73125
50-75	9	32	62.5	-50	-450	22500
75-100	2	34	87.5	-25	-50	1250
100-125	1	35	112.5	0	0	0
125-150	1	36	137.5	+25	+25	625
150-175	1	37	162.5	+50	+50	2500
175-200	1	38	187.5	+75	+75	5625

200-225	1	39	212.5	+100	+100	10000
	N=39				∑fdx=-2225	∑fdx²= 215625
समान्तर माध्य	55.45 हजार					
माध्यिका	43.27 हजार					
प्रमाप विचलन	47.6 हजार					

स्रोत– सर्वेक्षण

चयनित ग्राम पंचायत में आय का सामान्तर माध्य 55.45 हजार, माध्यिका 43.27 हजार तथा प्रमाप विचलन 47.6 हजार है। 25.64 प्रतिशत विधवाओं की वार्षिक आय 0–25 हजार की रेन्ज में है। 58. 98 प्रतिशत विधवाओं की आय औसत आय से कम है। 41.02 प्रतिशत विधवाओं की आय औसत आय से अधिक है। विधवाओं की आय में असमानता का विश्लेषण तालिका नं0 06 में किया गया है।

तालिका 6: विधवाओं की आय का आवृत्ति वितरण

आय हजारों में	विधवाओं की संख्या	संचयी आवृती	संचयी आवृत्ति % में	कुल आय हजारों में	आय की	% में आय की
CI	**f**	**cf**	**Cf**		**cf**	**Cf**
0-25	10	10	25.64	191340	191340	8.75
25-50	13	23	58.97	436500	627840	28.72
50-75	9	32	82.05	563780	1191620	54.52
75-100	2	34	87.17	176100	1367720	62.58
100-125	1	35	89.74	111000	1478720	67.66
125-150	1	36	92.30	133100	1611820	73.75
150-175	1	37	94.87	166500	1778320	81.37
175-200	1	38	97.43	185000	1963320	89.84
200-225	1	39	100	222000	2185320	100

स्त्रोतः सर्वेक्षण

तालिका से स्पष्ट है कि चयनित ग्राम पंचायत में आय की असमानता अधिक है क्योंकि 25.64 : विधवाओं के पास कुल आय का 8.75 : भाग है इनकी आर्थिक स्थिति कमजोर पायी गयी है तथा 2.57 : विधवाओं के पास कुल आय का 10.16 : भाग है। इनकी आर्थिक स्थिति ठीक पायी गयी है। चयनित ग्राम पंचायत में रामबेटी विधवा की वार्षिक आय 12000 रूपये पाई गई जोकि सभी विधवाओं से कम है और फूलमती विधवा की वार्षिक आय सबसे अधिक 222000 रूपये पायी गई।

6. सामाजिक–आर्थिक सीमाएं

विशेषतया वह स्त्रियाँ जो कम उम्र में विधवा होती है और परिवार का मुखिया उनको सम्पत्ति से बेदखल करके परिवार से अलग कर देता है तो उस पर कई जिम्मेदारियां आ जाती हैं। यदि वह अपनी जीविका चलाने के लिए घर से बाहर काम करना चाहे तो उसके प्रति प्रतिकूल सामाजिक नजरिया व समाज में प्रतिदिन घटित हो रही महिलाओं के साथ घटनाओं के डर से नहीं जाती और उसकी सामाजिक आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है। चयनित ग्राम पंचायत में विधवाओं में शिक्षा का स्तर बहुत नीचा है केवल 7.7 प्रतिशत विधवाएँ साक्षर है जोकि अधिकतम योग्यता 8वीं पास पाई गई हैं। इनमें से किसी भी विधवा के पास तकनीकी ज्ञान व किसी प्रकार का प्रशिक्षण नहीं है। इसीलिए इनको अच्छी जगह रोजगार नहीं मिलता है, वह घर के कृषि से सम्बन्धित कार्यों को करती रहती हैं जिनसे उनको कम आय प्राप्त होती है। सरकार विधवाओं को विधवा पेंशन, राशन कार्ड, इन्दिरा आवास आदि योजनाओं के माध्यम से लाभान्वित करती है मगर ऐसी योजनाओं को लागू नहीं करती जिनसे ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमशीलता की प्रवृत्ति बढ़े तथा उनसे सम्बन्धित उद्योग–धन्धों का विकास हो उनमें विधवाओं को प्रशिक्षण व रोजगार प्राप्त करने की प्राथमिकता मिले जिससे उनकी आय में वृद्धि हो और महिला सशक्तिकरण में मजबूती आये।

7. विधवाओं के सशक्तिकरण हेतु सुझाव

1. यदि कोई महिला कम उम्र में विधवा होती है उसके बच्चे छोटे–छोटे है, उसकी आर्थिक स्थति कमजोर है, वह अपने बच्चों का ठीक प्रकार से पालन पोषण नही कर पा रही है, यदि वह उचित समझे तो दूसरी शादी कर ले।
2. सरकार को ग्रामीण क्षेत्र में नये–नये उद्योग–धन्धे महिलाओं से सम्बन्धित स्थापित करने चाहिए तथा उसमें विधवाओं का प्राथमिकता होनी चाहिए। उनको उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार मिलना चाहिए।
3. यदि किसी विधवा के साथ कोई घटना जैसे बलात्कार, हत्या, छेड़खानी आदि घटित हो तो सरकार को और समाज को उसकी शीघ्र सामाजिक, आर्थिक, मानसिक सहायता करनी चाहिए और दोषियों को कठोर से कठोर सजा देनी चाहिए।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे आवासीय विद्यालय खोले जाने चाहिए जिनमें कक्षा एक से आठ तक निःशुल्क शिक्षा दी जाये। उन विद्यालयों में विधवाओं के बच्चों को प्रवेश में प्राथमिकता मिलनी चाहिए। जिससे उनकी शिक्षा की बुनियाद मजबूत होगी क्योंकि प्राथामिक शिक्षा ही उच्च शिक्षा की बुनिाद होती है। जिनकी बुनियाद कमजोर होती है वह माध्यमिक व उच्च शिक्षा ठीक प्रकार से ग्रहण नही कर सकता जैसे किसी इमारत की बुनियाद कमजोर होती है उसे अधिक बड़ा नही किया सकता क्योकि बड़ा करने में उसके गिरने का डर बना रहता है।
5. जब कभी गॉव में इन्दिरा आवास, राशनकार्ड, पेंशन व शौचालय से सम्बन्धित योजनाएँ चलाई जाये तो इनमें विधवाओं को प्राथमिकता होनी चाहिए कोई भी गरीब विधवा छूटनी नही चाहिए।

8. निष्कर्ष

ग्रामीण क्षेत्र में विधवाओं के दाम्पत्य जीवन का औसत 27 वर्ष पाया गया है। निदर्शित महिलाएं 16 वर्ष का वैधव्य जीवन व्यतीत कर चुकीं हैं। 7.7 प्रतिशत महिलायें साक्षर पायी गयी हैं जिनमें अधिकतम योग्यता 8वीं पास पायी गयी है। 10.26 प्रतिशत विधवाएं ऐसी हैं जिनके पास जमीन बिल्कुल नहीं है तथा इनकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर पायी है। 38.46 प्रतिशत विधवाएं ऐसी हैं जिनके पास जमीन 1–5 बीघा है और 7.7 प्रतिशत विधवाएं ऐसी हैं जिनके पास जमीन 15–20 वीघा है। 2.7 के पास जमीन 55–60 बीघा पायी गयी है एवं उनकी आर्थिक स्थिति भी ठीक पायी गयी है। 28.20 प्रतिशत विधवाएं परिवार की मुखिया हैं तथा 71.80 प्रतिशत विधवाएं अपने परिवार पर निर्भर हैं।

जब कोई महिला कम उम्र में विधवा होती है उस समय वह मानसिक रुप से बहुत परेशान होती है और समाज में घटित हो रही घटनाओं को देखती है तो उसको एक मानसिक धक्का लगता है जिससे वह अन्दर से टूट जाती है उसके दिल और दिमाग में डर भर जाता है और धीरे–धीरे अपनी मानसिक और गुणात्मक क्षमता को खो देती है उसकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति निम्न होती चली जाती है। वह धीरे–धीरे गरीबी के दुश्चक्र में फंस जाती है और समाज और सरकार से सामाजिक–आर्थिक सहायता की आस लगाये व्यथित जीवन जीती रहती है।

ग्रामीण क्षेत्र में विधवाओं की समाजिक–आर्थिक स्थिति बहुत दीन–हीन है। विधवा महिलाओं को इस तरह की दीन–हीन स्थितियों से बाहर निकालने की आवश्यकता है जिससे वह अपने जीवन को बेकार न समझकर अपने और अपने परिवार पर पूरा ध्यान दे पायें तथा उन्हें एक अच्छा समाजिक व मानसिक परिवेश दे पायें। एक अच्छे सामाजिक, मानसिक व सांस्कृतिक परिवेश में पली पीढ़ी से ही देश के विकास के लिए आवश्यक मानव संसाधन का निर्माण हो पाता है।

समाज में महिला साक्षरता को बढ़ाने की आवश्यकता है जिससे महिलायें इस तरह की परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने आप को पहले से बेहतर स्थिति में पायेगीं। समाज को जागरुक करके रुढ़िवादिता व विधवा महिलाओं के प्रति संकीर्ण नजरिये को मिटाने की आवश्यकता है। सरकार को विधवा महिलाओं के लिए उद्यमशील कार्यक्रम को बढ़ावा देने की आवश्यकता है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आर्थिक स्थिति मजबूत होने से समाज का उनके प्रति संकीर्ण नजरिया खुद व खुद बल जायेगा। इस तरह से विधवा महिलाओं का एक सम्मान जनक, सामाजिक, मानसिक और आर्थिक जीवन मिल जायेगा और वह अपनी हीन स्थिति से बाहर निकल जायेगी हमेशा के लिए।

9. परिशिष्ट :- सांख्किीय परिकलन

1. दाम्पत्य जीवन

सामान्तर माध्य $\bar{X} = A \pm \sum \frac{fdx}{n}$

$= 27.5 \pm \frac{30}{39}$

$= 27.5 - \frac{30}{39}$

$= 27.5 - .77$

$= 26.73$ वर्ष

माध्यिका $M = L_1 + \frac{i}{f}(m - cf)$

$m = \frac{n}{2} = \frac{39}{2} = 19.5$

$= 25 + \frac{5}{8}(19.5 - 18)$

$= 25 + 5 * \frac{1.5}{8}$

$= 25 + .94$

= 25.94 वर्ष

प्रमाप विचलन $= \sqrt{\sum \frac{fdx^2}{n} - (\sum fdx/n)^2}$

$= \sqrt{\frac{5750}{39} - \left(\frac{30}{39}\right)2}$

$= \sqrt{147.43 - (.77)^2}$

$= \sqrt{147.43 - .5929}$

$= \sqrt{146.8371}$

= 12.11 वर्ष

2. वैधव्य जीवन

समान्तर माध्य $\bar{X} = A \pm \sum \frac{fdx}{n}$

$= 22.5 - \frac{255}{39} = 6.54$

$= 22.5 - 6.54$

= 15.96 वर्ष

माध्यिका $M = L_1 + \frac{i}{f}(m - cf)$

$m = \frac{n}{2} = \frac{39}{2} = 19.5$

$= 10 + \frac{5}{11}(19.5 - 10)$

$= 10 + 5 * \frac{9.5}{11} = 10 + \frac{47.5}{11} = 4.32$

M = 10 + 4.32 = 14.32 वर्ष

प्रमाप विचलन $= \sqrt{\sum \frac{fdx^2}{n} - (\sum fdx/n)^2}$

$= \sqrt{\frac{5375}{39} - \left(\frac{1255}{39}\right)^2}$

$= \sqrt{137.82 - (6.54)^2}$

$= \sqrt{137.82 - 42.77}$

$= \sqrt{95.05}$

= 9.7

= 9.7 वर्ष

3. विधवाओं की आय

समान्तर माध्य $\bar{X} = A \pm \sum \frac{fdx}{n}$

$= 112.5 - \frac{2225}{39} = 57.05$

$= 112.5 - 57.05$

= 55.45

$\bar{X}$ = 55.45 हजार

माध्यिका M = $L_1 + \frac{i}{f}(m - cf)$

m = $\frac{n}{2} = \frac{39}{2} = 19.5$

$$25 + \frac{25}{13}(19.5 - 10)$$

$$25 + 25 * \frac{9.5}{13}$$

$$25 + \frac{237.5}{13} = 18.27$$

M = 25+18.27

= 43.27 हजार

प्रमाप विचलन = $\sqrt{\sum \frac{fdx^2}{n} - (\sum fdx/n)^2}$

$$= \sqrt{\frac{215625}{39} - \left(\frac{2225}{39}\right)^2}$$

$$= \sqrt{5528.84 - (57.05)^2}$$

$$= \sqrt{5528.84 - 3254.70}$$

$$= \sqrt{2274.14}$$

= 47.6 हजार

10. सन्दर्भ सूची

1. Idialu EE. The Inhuman Treatment of Widows in African Communities. Current Reesearch Jounral of Social Sciences. Ekpoma, Edo state, Nigiria. 2012; 4(1):6-11. ISSN: 2041-3246.
2. Mohindra KS, Haddad S, Narayana D. Debt, Shame and Survival: Becoming and Living as Widows in Rural Kerala India. Mohindra *et al*. BMC Internatioanl Health and Human Rights 2012. 1-13. http://www.biomed central.com/ 1472.698x/12/28
3. Surkan JP, Broaddus TE, Shrestha A, Thapa L. Non-disclosure of Widowhood in Nepal: Implications for Women and Their Children. Global Public Health. 2014, 1-12. http://www.dx.doi.org/10.1080/17441692.2014/939686
4. Dreze J, Srinivasan PV. Windowhood and Poverty in Rural India: Some Inferences from Household Survey Data. Jounral of Development Economics, Bombay, India. 1997; 54:217-234.
5. Chandra A. Vulnerability of Widoes in India: Need for Inclusion. International Jounral of Social and Economic Research. 2011; 1(1):124-132. www.IndianJounrals.com, c@rediffmail.com//chandra.anjuli@gmail.com
6. Swain P, Pilllai KV. Living Arrangements among Single Mother in India. Canadian Studies in Population. New Delhi, India. 2005; 32(1):53-67.
7. Bennett MK, Victor C. He wasn't in that Chair: What Loneliness means to Widowed Older people. International Jounral of Ageing and Later Life. 2012; 7(1):33-52. Liverpool, (L 697 ZA) UK. Email: kmb@liv.ac.uk